उ प सं हा र

उपसंहार

मेरे लघु-शोध-प्रबन्ध का विषय है ' कबीर के बाह्याचार सम्बन्धी विचार ' ।

कबीर मध्ययुग के श्रेष्ठ कवि हैं। हिन्दी साहित्य में कबीर का स्थान सर्वोपरि है। कबीर ने अपने युग को बहुत निकट से देखा और समझा था। कबीर ने सभी रूढ़ियों, आडम्बरों और पाखण्डों का खुलकर खण्डन किया।

प्रस्तुत प्रबन्ध के पहले अध्याय में मैंने कबीर के व्यक्तित्व एवं कृतित्व का परिचय दिया है। इस अध्याय में मैंने अन्य अनेक उपलब्ध ग्रन्थों के सहारे उनकी जीवनी लिखने का प्रयास किया है। कबीर के जीवन-काल के सम्बन्ध में विद्वानों में बहुत मतभेद हैं। इसका कारण उनके जीवन - काल के संबंध में सही ऐतिहासिक तिथि नहीं प्राप्त हो सकती। विविध किंवदन्तियों तथा हस्तलिखित प्रतियों के आधार पर कोई प्रामाणिक तिथि, जो सब दृष्टि से सर्वमान्य हो नहीं मिलती। वैसा होने पर भी अनेक मतों एवं उपलब्ध सामग्रियों का निरीक्षण करते हुए इसी बात को मानना पड़ा है कि कबीर का जीवन-काल सं.१४५५ से १५७५ तक है।

उनके माता-पिता का निश्चित पता नहीं उपलब्ध होता तथा उनके जन्म - स्थल के बारेमें भी विवाद है। उन्होंने अपने जीवन का अधिकांश समय काशी में बिताया। वह जुलाहा जाति के थे। वह पढ़े-लिखे नहीं थे, परन्तु उनका जीवन - अध्ययन बहुत गहरा था। साधु - सन्तों के सम्पर्क से उन्हें ज्ञान का बहुत बड़ा अंश प्राप्त हुआ था। उन्होंने अपने गुरू के सम्बन्ध में अत्यन्त आदर प्रकट किया है; तब भी उनके गुरू के नाम के सम्बन्ध में निश्चित कुछ कहना कठिन है। तथापि बहुत से

विद्वान स्वामी रामानन्द को उनके गुरू मानने के पक्ष में है। उनका परिवार था। भक्ति में लीन रहने के कारण अपने गृहस्थ धर्म का निर्वाह करने में उन्हें कठिनाई होती थी। सांसारिक होते हुए भी वे सांसारिक मोहजाल में लिप्त न थे। मृत्यु से पहले वे काशी को छोड़कर मगहर गये। वहीं उनकी मृत्यु हुई। उन्हें पर्याप्त लम्बी आयु प्राप्त हुई थी।

वे जन्मजात विद्रोही थे और उनमें एक अदम्य साहस तथा अखंड आत्म-विश्वास था। कबीर के व्यक्तित्व को देखने पर वे एक भक्त,समन्वयवादी युगद्रष्टा , समाज - सुधारक सन्त हैं यह लक्षित होता है।

कबीर पढ़े-लिखे नहीं थे, इसलिए उन्होंने स्वयं अपनी वाणी को लिपिबद्ध नहीं किया था। उनके शिष्यों ने कुछ को लिपिबद्ध किया और कुछ लोगों ने जबानी याद रखा। उनकी सभी कृतियों को देखने से हम यह अनुमान लगा सकते हैं कि वे काव्य-प्रतिभा के कवि थे। वे कोरे कवि नहीं; बल्कि पहले भक्त थे, बाद में कवि।

द्वितीय अध्याय में मैंने कबीर-कालीन भारत के समाज-दर्शन पर विचार किया है। कबीर-काल में राजनीतिक, आर्थिक,धार्मिक,साहित्यिक,सांस्कृतिक और सामाजिक संघर्ष बड़ी मात्रा में था। जनता अपनी रोजी-रोटी के लिए कोई भी धर्म,कोई भी व्यवसाय अपनाने के लिए तैयार होने लगी थी। आर्थिक समस्या मूल समस्या बन गई थी। धर्म और जाति समाज की दुर्गति के कारण बन गये थे। उनकी प्रतिष्ठा समाप्त हो गई थी। परिस्थितिवश हिन्दू जनता मुसलमान बनती जा रही थी। राज्य - विस्तार तथा धन-प्राप्ति के लिए हमेशा संघर्ष चलता रहा। हिन्दू राजे-महाराजे, जिन्होंने देश में छोटे-छोटे राज्यों का निर्माण किया था, आपसी फूट के कारण वे पराजित हुए। प्राय: मुसलमान शासक विजयी रहे। मन्दिरों एवं राजमहलों का संचित धन विदेशी आक्रमणकारियों के हाथ लगा। वस्तुत: राजनीतिक संघर्षों ने हिन्दुओं को सभी तरह से तोड़ डाला था। अब उनकी केवल प्राचीन गौरव गाथा ही शेष रह गयी थी।

मध्यकाल में सामाजिक संघर्ष तेजी से बढ़ता गया। इसमें एक धर्म का बन जाना आवश्यक बन गया था। जातिगत मतभेद बढ़ गया। मुसलमानों के अत्याचार के कारण समाज में पर्दा-प्रथा का प्रचलन हुआ। उचित सामाजिक व्यवस्था न होने के कारण लोगों का चारित्रिक पतन हुआ। सभी दुर्व्यवस्थाओं के विरोध में क्रान्तिकारी विचारकों का आविर्भाव हुआ।

कबीर-काल में हिन्दू-मुसलमान दो धर्मों का संघर्ष बहुत बढ़ गया था। हिन्दू धर्म अधिक पुराना होने के कारण अपने देश के रीति-रिवाज तथा संस्कारों में घुल मिल गया था; जिसके कारण जनता अपार मोह से उसके साथ लगी हुई थी। इस्लाम धर्म तलवार के बल पर चलाया जाने वाला धर्म था। समाज में अनेक पंथ व धर्म प्रचलित थे, जिसमें मिथ्याचार व पाखण्ड समाया हुआ था। शैव, वैष्णव, श्वेताम्बर - दिगम्बर, हीनयान - महायान, सिध्द-शाक्त बैरागी तथा बनखण्डी आदि साधुओं के अनेक सम्प्रदाय समाज में वर्तमान थे। इस काल में तीर्थ-यात्रा तथा धर्म स्थान का अधिक महत्व था।

मुसलमानों के आक्रमण और राजनीतिक परिवर्तन के कारण जनता की आर्थिक स्थिति अच्छी न रह सकी। राज्य की तरफ से सामाजिक विकास के लिए कोई अर्थव्यवस्था नहीं थी। राजपरिवार में फिजूल खर्च व विलासिता अधिक थी। परिणाम स्वरूप नैतिकता का पतन हुआ। कबीर कालीन साहित्य संघर्ष में अनेक धार्मिक, आर्थिक, सामाजिक और राजनीतिक क्रांतियाँ हो रही थीं। इन्हीं क्रान्तियों के बीच मध्यकालीन साहित्य का भी विकास हुआ। उस समय अरबी, फारसी , उर्दू , संस्कृत तथा हिन्दी आदि भाषाओं का प्रचलन हुआ। उस समय समाज में भगवान के प्रति मुख्य रूप से दो प्रकार की धारणाएँ, प्रचलित थीं — सगुण और निर्गुण। स्वामी रामानन्द, कबीर, रैदास आदि ने निर्गुण साहित्य को आगे बढ़ाया। इन सन्तों में खासकर कबीर ने सामाजिक, धार्मिक तथा आर्थिक दुर्व्यवस्थाओं के विरोध में उन्होंने आवाज उठायी तथा एक दूसरे के निकट आने की,

मिलते रहने की भावना को, युग की आवश्यकताओं को बल प्रदान किया।

कबीरदास ने सभी संकुचित सीमाओं को नकार कर मानव को मूलरूप में स्वीकार किया। उन्होंने सभी मनुष्यों को एक जाति और सारे मानव मात्र को एक मूल धर्म मान लिया। उन्होंने विश्व बंधुत्व, और सात्विक प्रेम की ज्योति प्रज्वलित की। कबीर ने मानव को मानवता के सूत्र में बाँधकर उसे सच्चा मानव बनाने का महान प्रयास किया।

तीसरे अध्याय में मैंने धर्म संबंधी कबीर की धारणा का वर्णन किया है। कबीर कालीन समाज में धर्म प्रमुख था। लोग राजनीति, साहित्य, अर्थ, धर्म का अनुसरण करते थे। पर यह धर्म वास्तव में धर्म नहीं था; बल्कि यह कर्मकाण्ड एवं बाह्याचार था। उस समय धर्म के नाम पर मानव समाज में अनेक वर्ग बन गये थे। इन वर्गों में विद्वेष के कारण संघर्ष था।

उस समय समाज में अन्धानुकरण ज्यादा था इसलिए लोगों में स्वतन्त्र चेतना का विकास नहीं हो सका। शासकों की विलासिता का प्रभाव साधारण जन-जीवन पर होने के कारण लोगों में अनेक दुर्गुण आ गए थे। जिससे समाज में अनेक तरह के भ्रष्टाचार फैले थे। कोई सामाजिक व्यवस्था न होने के कारण समाज में बहुत से लोग बेकार थे; जो साधुओं के भेष में इधर-उधर घूमते फिरते थे। राजनीतिक परिवर्तनों और अत्याचारों के कारण समाज में आर्थिक असमानता थी, जिससे सामाजिक प्रगति रूक गई थी। कबीर ने तटस्थ होकर समाज के इस बाह्य और अन्तरंग को देखा था। जहाँ भी उन्हें कुछ कमी दिखाई दी, उसकी उन्होंने आलोचना की। जिन पाखण्डों और दुर्व्यवस्थाओं का वर्णन कबीर के धार्मिक विचारों में पाया जाता है, वस्तुत: वे तत्कालीन समाज के मूल में विद्यमान थी।

कबीर मनुष्य को विशुद्ध सामाजिकता की दृष्टि से देखते थे, इसीलिए उस समाज में जितने ऊपर से आरोपित आवरण थे उनको वे उतार फैंकना चाहते थे। वे मानव-जीवन के व्यवहार को एक धर्म के रूप में देखना चाहते थे और समाज में प्रचलित

सारे कर्मकाण्डों का तिरस्कार करते थे। कबीर का विरोध उन सारी सामाजिक बुराइयों से था, न कि किसी धर्म या सम्प्रदाय से। वास्तव में कबीर के द्वारा किया गया विरोध एक वर्ग का विरोध था, जिसका नेतृत्व कबीर ने किया था। इन सब पाखण्डों की प्रतिक्रिया में कुछ कहने के लिए कबीर ही समर्थ थे, जो इतने साहस से बोल सकते थे। वे लोगों का मीठी और सच्ची बातें सुना सकते थे और पीरों, मुल्लाओं को फटकार भी सकते थे।

वास्तव में कबीर ने जो कुछ कहा है वह सर्वसाधारण के लिए कहा है। वह पूरे समाज की भलाई के लिए है। वे हमेशा ज्ञान या विचार को महत्व देते थे। जाति या धर्म के वे बिल्कुल पक्षपाती नहीं थे। उनका कहना था, " हिन्दू वही है, मुसलमान वही है जिसका ईमान ठीक हो, जो समाज में सब के साथ सद्व्यवहार रखे।" अगर व्यक्ति सद्व्यवहार को खोता है तो पूरे समाज को खोता है।

चतुर्थ अध्याय में मैंने कबीर के अनुसार धर्म और आचार का वर्णन किया है। कबीरदास के अनुसार सत्-संगति ही इस जीवन का सार है बाकी सब कुछ असार। मनुष्य का मनुष्य से सद्-व्यवहार ही सच्चा धर्म है। कबीर निर्गुणवादी थे। वे अव्यक्त के प्रति आस्थावान थे, परन्तु व्यक्त के प्रति उनकी भक्ति-भावना थी। वे कट्टर धार्मिक थे; परन्तु उनका धर्म सम्प्रदायवाद के विरोध में था। वे सब में उस परम सत्य का साक्षात्कार करते थे। कबीर ने गुरु को भगवान से भी अधिक महत्व दिया था। उनका कहना है कि बाह्याचार अर्थहीन है धर्म के नाम पर नहाना, उपवास रखना, तीर्थ यात्रा पर जाना, जोर-जोर से ईश्वर नामोच्चारना करना आदि पर कबीर ने तीव्र व्यंग्य किया और लोगों को धर्म के बारेमें जाग्रत किया। यहाँ कोई ऊँच - नीच नहीं है, सभी जगह भगवान का निवास होता है। हमें अपने मन को साफ रखना चाहिए। सब को समान समझना चाहिए।

कबीर के अनुसार हिन्दू तथा मुसलमान सही धर्म को नहीं जानते हैं। उनकी

आपस में लड़ाई अज्ञान के कारण है। कबीर ने मानव धर्म की स्थापना की है, जो कि प्रत्येक धर्म का मूल है। कबीर ने सब को कर्म करने की चेतावनी दी। ऐसा कर्म नहीं जो राम-नाम-विहीन हो। वही कर्म,कर्म है जो बहुजन सुखाय, बहुजन हिताय होता है। कबीर सभी जीवों में अभिन्नता देखते हैं क्योंकि सब में तो वही परमतत्व है, सभी ब्रह्म स्वरूप है। सत्य,दया, क्षमा,धीरज आदि कबीर के आचरण स्वयं के साथ-साथ सारे समाज के उत्थान के लिए ही थे। उनका कहना था कि मनुष्य को गर्व नहीं करना चाहिए। जितना हमारे पास धन आदि हो, उसी में मनुष्य को सन्तोष करना चाहिए। सही मानव-जीवन प्रतिष्ठा के लिए व्यक्ति को आचारनिष्ठ होना चाहिये।

पाँचवें अध्याय में मैंने दर्शन और आचार का वर्णन किया है। कोई भी दर्शन जिस परिस्थिति में पैदा होता है उसकी उस पर छाप होती है। समकालीन परिस्थितियों से वह प्रभावित होता है। कबीर का अनुभव-विश्व-समृद्ध था। वह उनकी अनुभूति और सारग्राहिता का प्रसाद है। वह जिन परिस्थितियों से गुजरे, उससे पूर्णरूप से प्रभावित थे। उसमें सामाजिक चेतना और सामाजिक प्रेरणा है, जो पथ - भ्रान्त मानव को एक उचित मार्ग दिखाता है।

कबीर का ब्रह्म विभिन्न मत मतान्तरों से प्रभावित होते हुए भी उपनिषदों में वर्णित ब्रह्म के अधिक निकट है। उनका पुरा विश्वास हमेशा निर्गुण - निराकार के प्रति ही रहा। कबीर ने मूर्तिपूजा, अवतारवाद आदि का खण्डन किया है। कबीर का राम घट-घट वासी है। वही जगत् का रूप धारण करता है, वही जीव है उसे ढूँढने के लिए कहीं दूर नहीं जाना पड़ता। कबीर ने जीव को निराकार,अनन्त एवं निर्विकार निरूपित किया है। वह सन्सार के नाम रूप से परे है। वह न जन्म लेता है, न मरता है। कबीर जीव को स्वयं प्रकाश, चैतन्य तथा आनन्द स्वरूप मानते हैं। जीव ईश्वर का अंश है, किन्तु ईश्वर से अलग होने पर वह आत्मा स्वरूप को भूलकर सन्सारी हो जाता है।

कबीर ने अद्वैतवाद के अनुसार ही ब्रह्म को सत्य और जगत् को मिथ्या माना

है। संसार को जल की बूंद के समान नश्वर माना है। संसार में जो कुछ दिखाई देता है वह वास्तव में सत्य नहीं है। वह भ्रम के कारण सत्य जैसा प्रतीत होता है; किन्तु यथार्थ में वह मिथ्या है। कबीर के मतानुसार संसार में जीव के बंधन का कारण माया है। संसार और उसके सारे प्रलोभन इसी के प्रतिरूप हैं। जीव इसीके कारण आवागमन के बंधन में फँसा है। कबीर ने माया को सर्व व्यापिनी कहा है। यह परमात्मा की ठगोरी है। इसके प्रभाव से जीव को स्वरूप-विस्मरण हो जाता है। कबीर ने माया की आवरण शक्ति को ही विशेष रूप से देखा है। वह सत्य को आवृत्त करती है जिससे मनुष्य सत्य को सत्य न समझ कर झूठ को ही सत्य मान बैठता है। माया से ही भ्रम की उत्पत्ति होती है। वह उस परम तत्व का साक्षात्कार नहीं कर पाता। गुरु उपदेश द्वारा ज्ञान उत्पन्न होने पर माया के पर्दे का नाश हो जाने से जीव परमात्मा से ऐक्य करने में समर्थ हो जाता है।

कबीर के अनुसार राम में 'एकमेक' होना ही मुक्ति है। जगत् की समस्त आशाओं को त्याग देना ही मुक्ति है। कबीर ने अच्छे व्यवहार को आचार कहा है। जिससे हमारे खुद का और सारे संसार का भला हो। कबीर को केवल अपना ही ध्यान नहीं था। उनका ध्यान समाज पर भी था। उन्होंने व्यष्टि और समष्टि को मिलाने की चेष्टा की। उनकी कहानी और कथनी में फर्क नहीं था। उनके चिन्तन की सारी धाराएँ एकरूप हो गई थीं। इसी कारण उनकी भक्ति, उनके धर्म और आचार - विचारों को हम पूर्णतया सुसम्बद्ध पाते हैं।

कबीर दार्शनिक के रूप में अद्वैतवादी थे। इसी कारण वे सभी को समान समझते थे। उनके लिए कोई ऊँचा नहीं था, कोई नीचा नहीं था। निवृत्ति - प्रवृत्ति, लोक - परलोक, गृहस्थ - संन्यास के व्यवहार में उन्होंने समन्वय स्थापित किया। कबीर ने विभिन्न मत मतान्तरों से अपने विचार और व्यवहार चुन लिए और उन सब में उचित समन्वय स्थापित किया। इसी से कबीर के काव्य का महत्व अजर और अमर है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

संदर्भ	ग्रंथ का नाम	लेखक	प्रकाशक । प्रकाशन एवं संस्करण
१	२	३	५
१	कबीर	आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी	राजकमल प्रकाशन नयी दिल्ली, प्रथम संस्करण, १९७१
२	कबीर	प्रभाकर माचवे	साहित्य अकादेमी फिरोजशाह मार्ग, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण १९८४
३	कबीर	डा. राजेन्द्र मोहन भटनागर	भारतीय ग्रन्थ निकेतन, दरियागंज नयी दिल्ली, १९८५
४	कबीर	संपादक विजयेन्द्र स्नातक	अरविन्द कुमार राधाकृष्ण प्रकाशन, दरियागंज, दिल्ली, तृतीय संस्करण १९७०
५	कबीर और उनका तुलनात्मक अध्ययन	डॉ. रामनाथ शर्मा	विश्वविद्यालय, प्रकाशन चौक, वाराणसी, प्रथम संस्करण १९८३ ई.

१	२	३	४
६	कबीर और उनका काव्य	डॉ.भोलानाथ तिवारी	राजकमल प्रकाशन, प्राइवेट लिमिटेड, दिल्ली अप्रैल १९६१
७	कबीर-काव्य का भाषा शास्त्रीय अध्ययन	डॉ.भगवत प्रसाद दुबे	नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली,प्रथम संस्करण, १९६९
८	कबीर : कल्पना-शक्ति और काव्य सौन्दर्य	ब्रह्मदत्त शर्मा	भारतेन्दुभवन,लोअर बाजार, शिमला,प्रथम संस्करण १९६९ ई.
९	कबीर काव्य -- कौस्तुभ	डॉ.बालमुकुन्द गुप्त	साहित्य संगम प्रसाद पारिजात,सिटी स्टेशन रोड, आगरा चतुर्थ संस्करण १९७१
१०	कबीर का रहस्यवाद	डा.रामकुमार वर्मा	साहित्य भवन प्रा.लि., इलाहाबाद,दसवीं आवृत्ति, सन १९६६
११	कबीर का सामाजिक-दर्शन	डॉ.प्रह्लाद मौर्य	पुस्तक संस्थान कानपुर १९७३
१२	कबीर काव्य के स्रोत	डॉ.भगीरथ प्रसाद यादव	अनुपम प्रकाशन,पटना, प्रथम संस्करण,१९७९

१	२	३	४
१३	कबीर की भाषा	डा.महेन्द्र	२२०३,गली डकोतान, तुर्कमान गेट,दिल्ली, प्रथम संस्करण : अगस्त १९६९
१४	कबीर ग्रंथावली	संपादक डा.श्याम-सुन्दरदास	नागरीप्रचारिणी सभा, वाराणसी,पंद्रहवाँ संस्करण सं.२०४१ वि.
१५	कबीर ग्रंथावली	डा.सावित्री शुक्ल और डा.चतुर्वेदी	प्रकाशन केन्द्र लखनऊ, प्रियंवदा प्रेस,आगरा
१६	कबीर ग्रंथावली सटीक	प्रो.पुष्पपाल सिंह	अशोक प्रकाशन, नई सड़क,दिल्ली, चतुर्थ संस्करण:१९७२
१७	कबीर-ग्रंथावली की भाषा	डा.विन्दुमाधव मिश्र	ज्ञान भारती प्रकाशन, दिल्ली
१८	कबीर की विचारधारा	डा.गोविन्द त्रिगुणायत	साहित्य निकेतन ,कानपुर तृतीय संस्करण : श्रावणी सं.२०२४
१९	कबीर-चिन्तन	डा.नारायणप्रसाद वाजपेयी	भावना प्रकाशन,दिल्ली, प्रथम संस्करण १९७९
२०	कबीर जीवन और दर्शन	डॉ.भोलानाथ तिवारी	साहित्य भवन(प्रा.) लिमिटेड,इलाहाबाद, प्रथम संस्करण:१९७८

१	२	३	४
२१	कबीर-परम्परा (गुजरात के संदर्भ में)	डा.कान्तिकुमार भट्ट	अभिनव भारती इलाहाबाद, प्रथम संस्करण : दिसम्बर १९७५
२२	कबीर बानी	डॉ.भगीरथ मिश्र	कमल प्रकाशन,प्रिंस यशवन्त रोड,इन्दौर ,पंचम संस्करण,१९८०
२३	कबीर मीमांसा	डॉ.रामचन्द्र तिवारी	लोकभारती प्रकाशन, महात्मा गांधी मार्ग, इलाहाबाद,प्रथम संस्करण : १९७६
२४	कबीर वाङ्मय : खंड-१- रमैणी	डा.जयदेव सिंह और डा.वासुदेव सिंह	विश्वविद्यालय,प्रकाशन, वाराणसी,प्रथम संस्करण १९७४ ई.
२५	कबीर वाणी	डा.पारसनाथ तिवारी	राका प्रकाशन,इलाहाबाद, पंचम संस्करण,१९७५ ई.
२६	कबीर साहित्य चिन्तन	आचार्य परशुराम चतुर्वेदी	स्मृति प्रकाशन,इलाहाबाद, प्रथम संस्करण,१९७०ई
२७	युग पुरुष कबीर	डॉ.रामलाल वर्मा और डॉ.रामचन्द्र वर्मा	भारतीय ग्रन्थ निकेतन लाजपतराय मार्केट,दिल्ली, प्रथम संस्करण :१९७८

१	२	३	४
२८	वैष्णव कबीर रहस्यवाद-मानवतावाद	डॉ.हरिहरप्रसाद गुप्त	भाषा-साहित्य-संस्थान त्रिवेणी रोड,इलाहाबाद, वर्ष जनवरी १९८६
२९	मनुस्मृति	संपादक देववाचस्पति श्री वासुदेववन	संस्करण १९६८, ६ । ९२
३०	सन्त कबीर	डा.रामकुमार वर्मा	साहित्य भवन प्रा. लि. इलाहाबाद, आठवीं आवृत्ति : १९६७
३१	साखी	डा.जयदेव सिंह और डा.वासुदेव सिंह	विश्वविद्यालय,प्रकाशन, वाराणसी प्रथम संस्करण १९७६ ई.
३२	हिन्दी के प्राचीन प्रतिनिधि कवि	डा.द्वारिका प्रसाद सक्सेना	विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा,षष्ठ संस्करण १९७९
३३	हिन्दी के प्रतिनिधि कवि	डा.सत्यदेव चौधरी	भारती साहित्य मन्दिर, दिल्ली,दूसरा संस्करण १९६३
३४	हिन्दी साहित्य युग और प्रवृत्तियाँ	डा.शिवकुमार शर्मा	अशोक प्रकाशन नई सड़क, दिल्ली,दशम संस्करण १९८६

अन्य सहायक ग्रन्थ सूची

संदर्भ क्रमांक	ग्रंथ का नाम	लेखक	प्रकाशक । प्रकाशन एवं संस्करण
१	कबीर का सहज दर्शन	प्रो.जयबहादुर लाल	नवयुग ग्रंथागार महानगर लखनऊ, प्रथम संस्करण सन १९८२
२	कबीर के काव्य रूप	डा.नजीर मुहम्मद	भारत प्रकाशन मन्दिर, अलीगढ़,प्रथम संस्करण: १९७१
३	कबीर ग्रंथावली	डा.माताप्रसाद गुप्त	दुर्गा प्रिंटिंग प्रेस आगरा, १ फरवरी १९६९ ।
४	कबीर पंथ पर पंथेतर प्रभाव	डा.वेद प्रकाश गिलडा ` शेवाल `	अनु बुक्स शिवाजी रोड, मेरठ प्रथम संस्करण,१९८५
५	कबीर वचनामृत-सार	डा.मुन्शीराम शर्मा	ग्रन्थम रामबाग,कानपुर, द्वितीय संस्करण, अगस्त १९७२
६	निर्गुण काव्य पर सूफी प्रभाव	डा.रामपति राय शर्मा	पुस्तक संस्थान नेहरूनगर कानपुर,संस्करण:१९७७
७	प्राचीन कवियों पर आलोचनात्मक अध्ययन	देवीशरण रस्तोगी	राजहंस प्रकाशन मन्दिर धर्म आलोक,रामनगर,मेरठ (उ.प.) नवीन संस्करण १९७३

१	२	३	४
८	मध्यकालीन हिन्दी-कविता पर शैवमत का प्रभाव	डा.कमला भण्डारी	पंचशील प्रकाशन, जयपुर, प्रथम संस्करण, १९७१
९	राम कृष्ण काव्येतर हिन्दी सगुण भक्ति काव्य	डा.छोटेलाल दीक्षित	भारत प्रकाशन मन्दिर अलीगढ़,प्रथम संस्करण : जनवरी १९६८
१०	संत काव्य में नारी	डा.कृष्ण गोस्वामी	शान्ति प्रकाशन रोहतक(हरियाणा) संस्करण : अक्तूबर १९८९
११	संत साहित्य	डा.राधेश्याम दूबे	तिलक विश्वविद्यालय प्रकाशन,वाराणसी, प्रथम संस्करण, १९७४
१२	साक्षात्कारी कबीर	श्री विनायकराव करमलकर	प्रकाश वा.करमलकर ४६,सुतारगली,इन्दौर, प्रथम संस्करण : १९९१
१३	हिन्दी काव्य में निर्गुण संप्रदाय	डा.पीताम्बरदत्त बड़थ्वाल	अवध पब्लिशिंग हाउस लखनऊ

कोश

संदर्भ क्रमांक	ग्रंथ का नाम	लेखक	प्रकाशक । प्रकाशन एवं संस्करण
१	दिनमान हिन्दी कोश	सम्पादक श्री शरण	दिनमान प्रकाशन ३०१४, चर्खेवालान दिल्ली ११०००६ पथम संस्करण १९८८
२	नालन्दा विशाल शब्द सागर	सम्पादक श्री नवल जी	आदीश बुक डिपो, करोल बाग, नई दिल्ली, संस्करण १९८८
३	बृहत्त हिंदी पर्यायवादी शब्द कोश	गोविन्द चातक	तक्षशिला प्रकाशन, नई दिल्ली, पथम १९८५
४	भारतीय मिथक कोश	डा. उषा पुरी विद्यावाचस्पति	नेशनल पब्लिशिंग हाउस, नयी दिल्ली, प्रथम संस्करण १९८६
५	हिन्दी साहित्य कोश (भाग-२-)	धीरेंद्र वर्मा	ज्ञान मण्डल लिमिटेड, प्रथम संवत २०२०
६	ज्ञान शब्द कोश	सम्पादक मुकुन्दीलाल श्रीवास्तव	बनारस ज्ञान मण्डल लिमिटेड संशोधित संस्करण १९८६

पत्रिका

क्रमांक	विषय	लेखक	पत्रिका
१	"कबीर ग्रंथावली की प्रमाणिकता"	शुकदेव सिंह	नागरी प्रचारिणी पत्रिका, अंक १-४ १९६३, पृ. ९७-१११
२	"कबीर ग्रंथावली : कुछ शब्दार्थोंपर पुणर्विचार"	शंभुसिंह मनोहर	नागरीप्रचारिणी पत्रिका अंक ४ भाग-७४, १९७० पृ. २६-५२
३	"गुरुनानकदेव और संत साहित्य"	परशुराम चतुर्वेदी	नागरीप्रचारिणी पत्रिका, अंक १, भाग-७५, पृ. ३६-४८ ।
४	बौध्द परंपरा और कबीरदास"	नागेंद्रनाथ उपाध्याय	नागरीप्रचारिणी पत्रिका, अंक १-४ १९७४, पृ. १३४-१४६,